

MARKING SCHEME ECONOMICS (576)

Class 12th

SAMPLE PAPER

SET: C

M.M:80

Q.NO.	EXPECTED ANSWER/VALUE POINTS	MARKS
1	d) गरीबी और बेरोजगारी की समस्या (d) Problem of poverty and unemployment	1
2	c) कीमत में परिवर्तन के बिना मांग में परिवर्तन (c) change in demand without change in price	1
3	b) AR घट रहा हो (b) when AR decreasing	1
4	a) शून्य (a) zero	1
5	(b) पूर्ण बेलोचदार पूर्ति (b) perfectly Inelastic supply	1
6	व्यष्टि अर्थशास्त्र Micro Economics	1
7	(-) $P/Q \times \Delta Q/\Delta P$ (-) $P/Q \times \Delta Q/\Delta P$	1
8	तकनीकी Technical	1
9	a) अभिकथन(A) और कारण (R) दोनों सही है और कारण (R) अभिकथन (A) की सही व्याख्या है। a) Both Assertion (A) and Reason (R) are correct and Reason (R) is the correct explanation of Assertion (A)	1
10	अभिकथन(A) सही है लेकिन कारण (R) गलत है। Assertion (A) is true but Reason (R) is false.	1
11	सीमांत लागत सीमांत आय के बराबर होनी चाहिए सीमांत लागत वक्र सीमांत आय को नीचे से काटती है। अथवा पूर्ण की लोच (E_s) = $P/Q \times \Delta Q/\Delta P$ $P=4, P_1=5; \Delta P=5-4=1$ $Q=8, Q_1=10; \Delta Q=10-8=2$ $E_s = 4/8 \times 2/1 = 1$ (इकाई) MC=MR MC curves cuts MR curve from below or Elasticity of supply (E_s) = $P/Q \times \Delta Q/\Delta P$ $P=4, P_1=5; \Delta P=5-4=1$ $Q=8, Q_1=10; \Delta Q=10-8=2$ $E_s = 4/8 \times 2/1 = 1$ (Unitary)	1.5 1.5 3
12	उपभोक्ता बजट से अभिप्राय उपभोक्ता की निर्धारित आय से है। जिसे इसे बजट रेखा द्वारा भी परिभाषित किया जा सकता है जो दो वस्तुओं के सेट के विभिन्न संयोगों को प्रकट करती है जो एक उपभोक्ता अपनी दी हुई आय तथा वस्तुओं की दी हुई कीमत पर खरीद सकता है। इसे कीमत रेखा भी कहते हैं क्योंकि यह वस्तु-x तथा वस्तु-y के बीच कीमत अनुपात को प्रकट करती है। Consumer budget means the fixed income of the consumer. In which can also be defined by the budget line which reveal different combinations of sets of two objects a consumer who is dependent on his given income and given amount of goods an buy at price. It is also called price line, because this reveals the price ratio between commodity x and commodity y.	3
13	अन्य बातें समान रहने पर किसी वस्तु की अपनी कीमत बढ़ने पर उसकी मांग कम हो जाती है तथा अपनी कीमत कम होने पर उसकी मांग बढ़ जाती है। अथवा अन्य बातें समान रहने पर किसी वस्तु की अपनी कीमत बढ़ने पर उसकी पूर्ति बढ़ जाती है तथा कीमत कम होने पर पूर्ति भी कम हो जाती है। The demand for a good when its price increases, other things remaining the same. It decreases and its demand increases when its price decreases. Or Other things remaining the same, when the price of a commodity increases, its supply increases and when the price decreases, the supply also decreases.	
14	अवसर लागत की धारणा लागत की आधुनिक धारणा है। किसी साधन की अवसर लागत से अभिप्राय दूसरे सर्वश्रेष्ठ वैकल्पिक प्रयोग में उसके मूल्य से है। अतएव किसी साधन की अवसर लागत वह लागत है जिसका उस साधन को किसी एक कार्य में कार्यरत होने के फलस्वरूप दूसरे वैकल्पिक कार्य को नहीं कर पाने के कारण त्याग करना पड़ता है। The concept of opportunity cost is the modern concept of cost. opportunity of any means Cost means its value in the second best alternative use. Therefore The opportunity cost resource is the cost of Being unable to do other alternative work as a result of being employed at work Reason has to be sacrificed.	4
15	पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह स्थिति है जिसमें किसी समरूप वस्तु के बहुत से केरता तथा विक्रेता होते हैं। पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में फर्म केवल बाजार कीमत पर ही अपने उत्पादन का Perfect competition is a market situation in which there are many sellers of an identical product. There are buyers and sellers. In perfect competition the	2\$2

विक्रय कर सकती है। पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में फर्म की प्रत्येक इकाई की विक्रय कीमत समान होती है। परिणामस्वरूप उसका सीमांत तथा औसत आगम बराबर होता है।

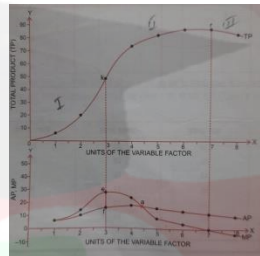
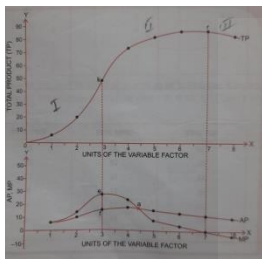
firm can only charge the market price. She can sell her produce only. under perfect competition
The selling price of each unit of the firm is the same. as a result of Marginal and average revenue are equal.

16 **कुल उत्पादन:** एक निश्चित समय में उत्पादित की गई वस्तुओं तथा सेवाओं की कुल मात्रा को कुल उत्पादन कहा जाता है।
सीमांत उत्पादन: परिवर्तनशील कारक की एक इकाई का कम या अधिक प्रयोग करने से कुल उत्पाद में जो अंतर आता है सीमांत उत्पाद कहा जाता है।

Total production: The total number of goods and services produced in a given period of time.
The total quantity is called total production.
Marginal production: Using more or less of a unit of a variable factor.
The difference in total product resulting from doing so is called marginal product.

ब्रम की इकाइयाँ (हेक्टेयर)	ब्रम की इकाइयाँ	कुल उत्पाद	सीमांत उत्पाद
0	0	0	—
1	1	2	2 - 0 = 2
1	2	5	5 - 2 = 3
1	3	9	9 - 5 = 4
1	4	11	11 - 9 = 2
1	5	12	12 - 11 = 1
1	6	12	12 - 12 = 0
1	7	11	11 - 12 = -1

ब्रम की इकाइयाँ (हेक्टेयर)	ब्रम की इकाइयाँ	कुल उत्पाद	सीमांत उत्पाद
0	0	0	—
1	1	2	2 - 0 = 2
1	2	5	5 - 2 = 3
1	3	9	9 - 5 = 4
1	4	11	11 - 9 = 2
1	5	12	12 - 11 = 1
1	6	12	12 - 12 = 0
1	7	11	11 - 12 = -1



अथवा

पुर्ति की कीमत लोच किसी वस्तु की कीमत में होने वाले परिवर्तन के फलस्वरूप उसकी पूर्ति में होने वाले परिवर्तन का माप है।

Or

Price elasticity of supply is the effect of a change in the price of a good. It is the measure of the change in its supply.

- 1) पुर्ति की लोच > 1 : जब किसी वस्तु की पुर्ति में प्रतिशत परिवर्तन कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन से अधिक होता है इस दशा में पुर्ति की लोच इकाई से अधिक होती है।
- 2) पुर्ति की लोच < 1 : जब किसी वस्तु की पुर्ति में प्रतिशत परिवर्तन कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन से कम होता है तो इस दशा में पुर्ति की लोच इकाई से कम होती है।
- 3) पुर्ति की लोच $= 1$: किसी जब किसी वस्तु की पुर्ति में परिवर्तन उसी अनुपात में होता है जिस अनुपात में उसकी कीमत में परिवर्तन हुआ है तो उस वस्तु की पूर्ति को इकाई लोच कहते हैं।

- 1) Elasticity of supply > 1 : When the percentage change in the supply of a good depends on the price. If it is more than the percentage change, then in this case the elasticity of supply is greater than unit is more.
- 2) Elasticity of supply < 1 : When the percentage change in the supply of a good increases in price is less than the percentage change occurring, then in this case the elasticity of supply is unit is less than.
- 3) Elasticity of supply $= 1$: When the change in supply of a good occurs in the same proportion as the change in its price, then the supply of that good increases. is called unit elasticity.

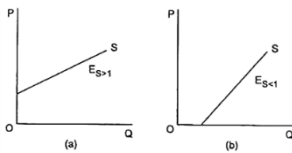


Fig. 5: Elastic and inelastic supply

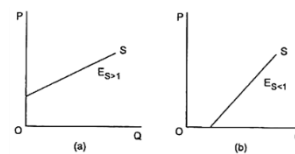
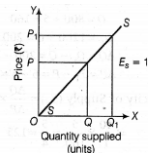
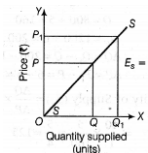
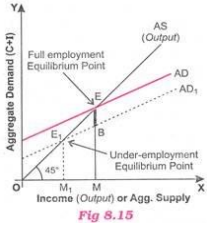
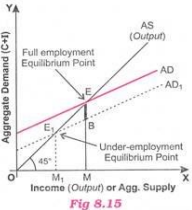
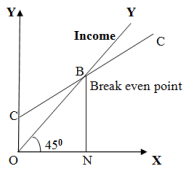
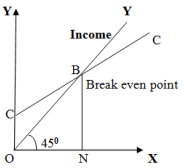


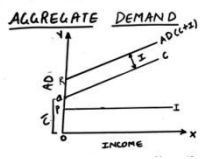
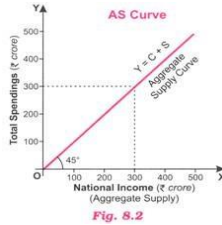
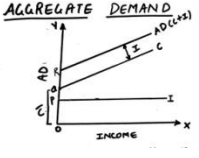
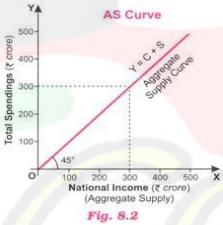
Fig. 5: Elastic and inelastic supply



2+2
+2

<p>17</p>	<p>भोग का विद्यमान</p> <p>(a) व्ययव्ययन वस्तु की कीमत में वृद्धि (Increase in Price of Substitute Good): जब चाय की कीमत OP_1 है तब उसकी माँग OT_1 है। मान लीजिए चाय की कीमत स्थिर रहती है किन्तु कॉफी की कीमत में वृद्धि हो जाती है। एक उपभोक्ता के जलते आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी? एक विवेकशील उपभोक्ता के रूप में आप अपनी वस्तु कॉफी के स्थान पर अपेक्षाकृत सस्ती वस्तु चाय का प्रतिस्थापन करेंगे। अर्थात् आपसे यह अपेक्षा की जाएगी कि आप चाय की अधिक माँग करें, भले ही इसकी कीमत स्थिर रहती है। इसे चित्र 9 द्वारा दिखाया गया है।</p> <p>आप में आप $OT_1 (= P_1K_1)$ मात्र में चाय की माँग कर रहे थे। अब आप $OT_2 (= P_1K_2)$ मात्र खरीदने के लिए तैयार हो जाते हैं चाहे चाय की कीमत OP_1 स्थिर रहती है। स्थिर कीमत पर वस्तु की अधिक मात्रा में माँग की स्थिति को ही माँग में वृद्धि कहते हैं। फलस्वरूप चाय की माँग वक्र D_1 से दाईं ओर खिसक कर D_2 का रूप धारण कर लेती है।</p> <p>(a) पूरक वस्तु की कीमत में वृद्धि (Increase in Price of Complementary Good): यदि कार (स्वित्) की कीमत OP_1 है तो कारों की माँग OT_1 है। मान लीजिए कार की कीमत स्थिर रहती है किन्तु पेट्रोल की कीमत बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में उपभोक्तियों की क्या प्रतिक्रिया होगी? उनकी प्रवृत्ति कम कारें खरीदने की होगी, भले ही कार की कीमत स्थिर रहती है। इस स्थिति को चित्र 11 द्वारा दर्शाया गया है।</p> <p>आप में कारों की माँग $OT_1 (= P_1K_1)$ थी। पेट्रोल की कीमत के बढ़ जाने के कारण अब यह माँग घट कर $OT_2 (= P_1K_2)$ रह जाती है। यह माँग में कमी की स्थिति है जिसमें माँग वक्र दाईं ओर D_1 से खिसक कर D_2 का रूप धारण कर लेता है।</p>	<p>(i) Increase in Price of Substitute Good: Initially, if price of tea remains constant but the price of coffee increases. How would you react as a consumer?</p> <p>As a rational consumer, you may decide to substitute some of your coffee for tea. Or, you are expected to buy more of tea when its price is constant (Fig. 10).</p> <p>Initially you were buying P_1K_1 quantity of tea (which is equilibrium quantity of a commodity at its constant price points as shown in Fig. 10). Now, the price of coffee increases. Accordingly, demand curve for tea shifts to the right from D_1 to D_2.</p> <p>(ii) Increase in Price of Complementary Good: Initially, if price of cars (say Swift) is OP_1, number of cars purchased is $P_1K_1 (= OT_1)$. Now, suppose this price remains constant but the price of petrol increases. How would the consumers react to such a situation?</p> <p>They would tend to buy less cars, even when price of the cars is constant (Fig. 13).</p> <p>Now, even when price of cars is constant, only $P_1K_2 (= OT_2)$ cars are purchased, because price of petrol has increased. This is a situation of decrease in demand or backward shift in demand curve. Accordingly, demand curve shifts from D_1 to D_2.</p>	
18	a) उपभोग	a) consumption	1
19	b) आयात	b) Export	1
20	b) 2	b) 2	1
21	a) स्थिर कीमतें	a) Fixed price	1
22	c) 1935	c) 1935	1
23	मुद्रा के प्रवाह	flow of money	1
24	निवल अप्रत्यक्ष कर	net indirect tax	1
25	आय	income	1
26	a) अभिकथन(A) और कारण (R) दोनों सही है और कारण (R) अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।	a) Both Assertion (A) and Reason (R) are correct and Reason (R) is the correct explanation of Assertion (A)	1
27	a) अभिकथन(A) और कारण (R) दोनों सही है और कारण (R) अभिकथन (A) की सही व्याख्या है।	a) Both Assertion (A) and Reason (R) are correct and Reason (R) is the correct explanation of Assertion (A)	1
28	<p>आय में से उपभोग घटाने के बाद जो शेष बचता है उसे बचत कहते हैं तथा जो बचत और आय के संबंध को प्रकट करता है उसे बचत का फलन है।</p> <p>बचत आय पर निर्भर करती है क्योंकि आय के बढ़ने पर बचत बढ़ती है और कम होने पर कम होती है। बचत में वृद्धि की दर समान्यतः आय में वृद्धि की दर से अधिक होती है।</p> <p>अथवा</p> <p>असंतुलन उस स्थिति को कहते हैं जिसमें भुगतान शेष या तो बचत वाला या घाटे वाला होता है। इसे ठीक करने के उपाय इस प्रकार हैं:- आयातों को हतोत्साहित करना। निर्यातों को प्रोत्साहित करना। मुद्रा विस्फीति। अवमूल्यन।</p>	<p>The balance that remains after deducting consumption from income is called saving. Saving function which reveals the relationship between savings and income. Saving depends on income, because when income increases, savings increase and when it decreases, it decreases. The rate of growth in savings is generally higher than the rate of growth in income.</p> <p>OR</p> <p>An imbalance is a situation in which the payment of balance is either a saving or a deficit is the one. The ways to fix it are as follows: Discourage imports, Encourage exports, Currency deflation, Depreciation.</p>	3
29	राष्ट्रीय आय एवं निजी आय में तीन अंतर इस प्रकार हैं:- राष्ट्रीय आय: इसमें ब्याज शामिल किया जाता है जबकि निजी आय में राष्ट्रीय ऋणों पर ब्याज के भुगतान को शामिल	The three differences between national income and personal income are as follows:- National Income: Interest is included in it whereas	1.5+ 1.5

	करते हैं। राष्ट्रीय आय में केवल आय भुगतान शामिल किए जाते हैं जबकि निजी आय में आय भुगतान तथा हस्तांतरण भुगतान दोनों शामिल किए जाते हैं।	Personal income includes interest payments on national debts. Let's do it. Only income payments are included in national income. While personal income includes income payments and transfers. Both payments are included.	
30	अधि मांग वह स्थिति है जिसमें समग्र मांग अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार के लिए आवश्यक समग्र पूर्ति से अधिक होती है। पूर्ण रोजगार के अनुरूप $AD > AS$	Excess demand is a situation in which the aggregate demand in the economy is more than the aggregate supply required for employment. According to full employment $AD > AS$	2+2
	 <p>अथवा</p> <p>बजट घाटा:- बजट घाटे से अभिप्राय उस स्थिति से है जिसमें सरकार का बजट व्यय, सरकार की बजट प्राप्तियों से अधिक होता है। बजटिय घाटा वह स्थिति है जिसमें सरकारी व्यय > सरकारी प्राप्तियां। यह तीन प्रकार का होता है:-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. राजस्व घाटा 2. राजकोषीय घाटा 3. प्राथमिक घाटा <p>प्राथमिक घाटे को पुरा करने के उपाय इस प्रकार हैं :-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. सरकारी व्यय को कम करके 2. सरकारी प्राप्ति में वृद्धि करके 	 <p>OR</p> <p>Budget deficit:- Budget deficit means the situation in which In which the budget expenditure of the government is more than the budget receipts of the government. Budgetary deficit is a situation in which government expenditure > government receipts.</p> <p>It is of three types:-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. Revenue deficit 2. Fiscal deficit 3. Primary deficit <p>Ways to overcome primary deficit are as follows</p> <p>Is :-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. By reducing government expenditure 2. By increasing government receipts 	2+2
31	कर सरकार द्वारा वैधानिक रूप से ग्रहणों तथा उत्पादकों पर लगाया गया एक आवश्यक भुगतान है जो मुख्यतः प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष करों में वर्गीकृत किया गया है। इसकी मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:-	Taxes are legally imposed by the government on farmers and producers. Imposed is a necessary payment which is mainly direct and Classified as indirect taxes. Its main features are as follows	2+2
	<ol style="list-style-type: none"> 1. कर एक अनिवार्य भुगतान है जिसका भुगतान करदाता को अवश्य करना पड़ता है। 2. सरकार द्वारा कर से प्राप्त आय का प्रयोग सार्वजनिक हित के कार्यों में किया जाता है। 3. सरकार करदाता को कर के बदले में प्रत्यक्ष लाभ प्रदान करने का कोई आश्वासन नहीं देती है। 	<ol style="list-style-type: none"> 1. Tax is a mandatory payment which has to be paid by the taxpayer. 2. Use of tax income by the government for public welfare is done in the works of. 3. The government provides direct benefits to the taxpayer in lieu of taxes. Does not give any assurance of doing so. 	
32	उपभोग फलन वह अनुसूचि है जो आय के विभिन्न स्तरों पर उपभोग की मात्रा को बताती है। उपभोग से अभिप्राय किसी अर्थव्यवस्था में एक निश्चित समय में उपभोग पर किए जाने वाले समग्र व्यय से है जो अपनी आवश्यकताओं को प्रत्यक्ष रूप से सन्तुष्ट करने के लिए लोगो द्वारा वस्तुओं तथा सेवाओं के को खरीदने पर खर्च की जाने वाली मुद्रा की मात्रा को उपभोग व्यय कहा जाता है। $C=f(Y)$	Consumption function is a schedule that shows different types of income. Tells the quantity of consumption at levels. consumption means a certain period of time in an economy It is the total expenditure on consumption which directly satisfies one's needs. goods and services by people to the amount of money spent on purchasing is called consumption expenditure. $C=f(Y)$	2+2
			

<p>33</p>	<p>समग्र मांग रू. समग्र मांग से अभिप्राय अर्थव्यवस्था में वस्तुओं तथा सेवाओं की समग्र मांग से है। इसे वस्तुओं तथा सेवाओं पर किए जाने वाले समग्र व्यय के रूप में मापा जाता है। इसके मुख्य रूप से दो घटक होते हैं:-</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. उपभोग व्यय 2. निवेश व्यय <p>अतः समग्र मांग = उपभोग व्यय + निवेश व्यय</p>  <p>समग्र पूर्ति से अभिप्राय किसी निश्चित समय में किसी अर्थव्यवस्था द्वारा एक वर्ष की अवधि में उत्पादित समग्र अन्तिम वस्तुओं तथा सेवाओं के मौद्रिक मूल्य से है जिसे राष्ट्रीय आय या राष्ट्रीय उत्पाद भी कहा जाता है। यह उत्पादन की समग्र लागत है जो उत्पादन के विभिन्न साधनों को मजदूरी लगान ब्याज तथा लाभ के रूप में दी जाती है। राष्ट्रीय आय लेखांकन के ज्ञान के आधार पर यहा कहा जा सकता है कि समग्र पूर्ति की धारणा मूल्य वृद्धि की धारणा के समान है।</p> <p>समग्र पूर्ति = उपभोग + बचत</p>  <p>अथवा</p> <p>ऐच्छिक बेरोजगारी एवं अनैच्छिक बेरोजगारी</p> <p>ऐच्छिक बेरोजगारी ऐच्छिक बेरोजगारी से अभिप्राय उस स्थिति से है जिसमें एक श्रमिक रोजगार उपलब्ध होने पर भी, मजदूरी की वर्तमान दर काम करने के लिए तैयार नहीं होता है। उदाहरण के लिए, एक डॉक्टर का बाजार में प्रचलित वेतन 10 हजार रूपये प्रतिमाह है परंतु वह इस वेतन पर काम करने लिए तैयार नहीं है, इसे ऐच्छिक बेरोजगारी कहा जाएगा। इस बेरोजगारी को समग्र अनुमान में शामिल नहीं किया जाता। किसी देश में ऐच्छिक बेरोजगारी के होते हुए भी पूर्ण रोजगार हो सकता है।</p> <p>अनैच्छिक बेरोजगारी अनैच्छिक बेरोजगारी यह बेरोजगारी की वह स्थिति है जिसमें रोजगार के अवसर के अभाव में बेरोजगार रहना पड़ता है, यद्यपि वे मजदूरी की वर्तमान दर पर काम करने तैयार होते हैं। अर्थव्यवस्था में बेरोजगारी के समग्र अनुमान में अनैच्छिक बेरोजगारी को शामिल किया जाता।</p>	<p>The overall demand is Rs. Aggregate demand refers to the demand for goods in the economy. And from the overall demand for services, goods and services It is measured as the overall expenditure. It mainly has two components:</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. Consumption expenditure 2. Investment expenditure <p>Hence, Aggregate Demand, Consumption Expenditure, Investment Expenditure AD= C+I</p>  <p>Overall supply means any aggregate produced by the economy over a period of one year The monetary value of final goods and services which Also called national income or national product. This production is the overall cost of various means of production Labor rent is given in the form of interest and profit. Based on the knowledge of national income accounting it can said here. The assumption of aggregate supply may be the assumption of price rise. Is similar to aggregate supply = consumption + savings</p>  <p>Voluntary unemployment and involuntary unemployment</p> <p>Voluntary Unemployment Voluntary unemployment refers to a situation in which a worker, even when employment is available, is still employed at the current rate of wages. Is not ready to work. For example, the prevailing market salary of a doctor 10 thousand rupees per month but he does not want to work at this salary. If the person is not ready for employment, it will be called voluntary unemployment. This Unemployment is not included in the overall estimate. Any There should be full employment despite voluntary unemployment in the country. Could.</p> <p>Involuntary Unemployment: Involuntary Unemployment: This is a situation of unemployment in which Due to lack of employment opportunities one has to remain unemployed. Although they are willing to work at the current rate of wages Happens. Involuntary in the overall estimate of unemployment in the economy Unemployment would have been included.</p>	<p>3+3</p> <p>3+3</p> <p>3+3</p>
<p>34</p>	<p>पूर्ण रोजगार एवं अल्प रोजगार संतुलन</p>	<p>full employment and underemployment balance</p> <p>Full Employment:- Full employment expresses the situation</p>	<p>3+3</p>

<p>पूर्ण रोजगार:- पूर्ण रोजगार उस स्थिति को व्यक्त करता है जिसमें समग्र मांग, समग्र पूर्ति के बराबर हो और वे सभी जो काम करने के योग्य तथा काम करने के इच्छुक है, वर्तमान मजदुरी की दर पर रूढ़ काम प्राप्त कर लेते हैं। पूर्ण रोजगार संतुलन एक स्थिर संतुलन है जहां वास्तविक उत्पादन अधिकतम बिंदु पर पहुंच जाता है। पूर्ण रोजगार संतुलन से आगे बढ़ने की अवस्था में कीमत स्तर में वृद्धि होती है।</p> <p>अल्प रोजगार संतुलन:- अल्प रोजगार संतुलन वह स्थिति है जिसमें समग्र मांग समग्र पूर्ति के बराबर तो होती है लेकिन वे सभी जो काम करने के योग्य एवं इच्छुक है वर्तमान मजदुरी दर पर काम प्राप्त नहीं कर पाते हैं अल्प रोजगार संतुलन एक स्थिर संतुलन नहीं है और यहां वास्तविक उत्पादन उच्चतम बिंदु पर नहीं पहुंच पाता। अल्प रोजगार संतुलन से आगे बढ़ने पर कीमत स्तर में भी वृद्धि नहीं होती है।</p> <p>अथवा</p> <p>मुद्रा की पूर्ति एक स्टॉक धारणा है। इससे अभिप्राय किसी एक समय बिंदु पर देश में लोगों के पास कुल मुद्रा; सभी प्रकार की रूढ़ के स्टॉक से है। भारत में मुद्रा पूर्ति के चार वैकल्पिक माप हैं, जैसे M_1, M_2, M_3 और M_4</p> <p>M_1 = जनता के पास करेंसी + मांग जमाएं + रिजर्व बैंक के पास अन्य जमाएं। M_2 = M_1 + डाकखानों के बचत बैंक खातों में जमाएं।</p> <p>M_3 = M_1 + व्यापारिक बैंकों की निवल सावधि जमाएं।</p> <p>M_4 = M_3 + डाकखानों की कुल जमाएं को (NSS को छोड़कर)।</p>	<p>that in which aggregate demand is equal to aggregate supply and all those Able to work and willing to work, present Get work at wage rate. Full employment equilibrium is a stable equilibrium where real Production reaches its maximum point. Price moving from full employment equilibrium Level increases.</p> <p>Underemployment Equilibrium:- Underemployment Equilibrium is the situation In which aggregate demand is equal to aggregate supply but they all who are capable of working and Are interested but are unable to get work at the current wage rate Underemployment equilibrium is not a stable equilibrium and here Actual production does not reach its highest point. As the price level moves beyond underemployment equilibrium, There is no growth. full employment and underemployment balance Full Employment:- Full employment expresses the situation that in which aggregate demand is equal to aggregate supply all those Able to work and willing to work, present Get work at wage rate. Full employment equilibrium is a stable equilibrium where real Production reaches its maximum point. Price moving from full employment equilibrium Level increases.</p> <p>Or</p> <p>Money supply is a stock assumption. This means someone The total currency held by people in a country at a point in time (All types) are from stock. There are four alternative measures of money supply in India, such as M_1, M_2, and M_3 and M_4</p> <p>M_1 = currency with the public + Demand deposit + Other deposits with the Reserve Bank of India.</p> <p>M_2 = M_1 + Deposit in the savings bank accounts of post offices.</p> <p>M_3 = M_1 + Net fixed deposits of commercial banks. M_4 = M_3 + Total deposits of post offices (Except NSS).</p>	<p>3+3</p>
---	--	------------